Political Parties (राजनीतिक दल)

- राजनीतिक दलों का महत्व –
- राजनीतिक दलों के आवश्यक तत्व –
- दलीय प्रणाली के प्रकार (वर्गीकरण) –
- राजनीतिक दलों की भूमिका (लोकतंत्र में) –
- दल प्रणाली का मूल्यांकन (गुण) –
- दलीय पद्धति के दोष –

* प्रस्तावना

आधुनिक प्रजातंत्र के संचालन व उसकी सफलता के लिए राजनीतिक दल आवश्यक हैं। वर्तमान प्रतिनिधि लोकतंत्र के अन्तर्गत जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है और उन प्रतिनिधियों के द्वारा शासन कार्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रतिनिधयात्मक शासन-व्यवस्था लोकमत पर आधारित होती है और राजनीतिक दल लोकमत का निर्माण और उसकी अभिव्यक्ति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। मुनरो ने ठीक ही कहा है कि, "राजनीतिक दल आवश्यक हैं। कोई भी स्वतन्त्र देश ऐसा नहीं रहा जिसमें दल नहीं रहे हैं। कोई भी व्यक्ति यह नहीं बता सका है कि प्रजातंत्र शासन का संचालन उनके बिना कैसे हो सकता है। वे अव्यवस्था में से व्यवस्था पैदा करते हैं। यदि वे कुछ बुराइयाँ उत्पन्न करते हैं तो वे अन्य बुराइयों को दूर कर भी दूर करते हैं।"

अमरीकी संविधान निर्माता अपने देश में किसी भी रूप में राजनीतिक दलों को पनपने नहीं देना चाहते थे किन्तु संविधान लागू किये जाने के बाद दलीय संगठन अमरीकी राजनीतिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता बन गये।

संसदीय शासन के अन्तर्गत केवल सत्तारूढ़ दल का ही नहीं, वरन् विरोधी दल का भी महत्वपूर्ण स्थान है। विरोधी दल शासन पर अंकुश रखते हुए राजनीतिक दल को नियंत्रित करने का कार्य करते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि आधुनिक राजनीतिक जीवन में राजनीतिक दलों का बड़ा महत्व है और इनके बिना लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता।

* परिभाषा :

राजनीतिक दल मनुष्यों का एक संगठित समूह है जिसके सदस्य कुछ सामान्य राजनीतिक व आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, वे अपनी विचारधारा से मतदाताओं को परिचित कराते हैं और निर्वाचनों में सफलता प्राप्त करके अपनी सरकार बनाना चाहते हैं और ऐसा कर अपने

उद्देश्यों को पूरा करना चाहते हैं।

बर्क के अनुसार — "मनुष्यों के ऐसे संगठन को राजनीतिक दल कहते हैं जिसमें वे अपने सामूहिक प्रयास द्वारा किसी ऐसे सिद्धान्त पर राष्ट्रीय हितों की वृद्धि करने के लिए संगठित होते हैं, जिसके विषय में वे सब सहमत होते हैं।" गिलक्राइस्ट के शब्दों में, "राजनीतिक दल ऐसे नागरिकों का संगठन होता है जो राजनीतिक इकाई के रूप में कार्य करके अपना शासन स्थापित करना चाहता है।"

* **राजनीतिक दल आवश्यक तत्व :**

राजनीतिक दल की परिभाषाओं से स्पष्ट है कि राजनीतिक दल के निर्माण के लिए कुछ आवश्यक तत्व होना जरूरी है —

1. **संगठन** — अर्थात् विचार वाले लोगों का संगठित होना आवश्यक है। असंगठित भीड़ समुदाय को दल नहीं कहा जा सकता।

2. **आधारभूत सिद्धान्तों में एकता** : किसी दल के मूल सिद्धान्तों पर दल के सभी सदस्यों में मतैक्य होना चाहिए। किसी दल के निश्चित आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक कार्यक्रम होते हैं जिनपर कि उस दल के सदस्य सहमत होते हैं।

3. **संवैधानिक उपायों का प्रयोग** : राजनीतिक दलों को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सदा ही संवैधानिक उपायों का प्रयोग करना चाहिए। निर्वाचन में बहुमत प्राप्त करने के बाद ही वे अपनी सरकार बनाते हैं।

4. **राष्ट्रीय हित** : राजनीतिक दलों का उद्देश्य किसी जाति, सम्प्रदाय, या वर्ग के स्वार्थों की पूर्ति करना न होकर राष्ट्रीय हित की वृद्धि होना चाहिए।

* **दलीय प्रणाली के प्रकार :**

दलीय प्रणाली तीन प्रकार की हो सकती है —

1. **एकदलीय प्रणाली**

एकदलीय में केवल एक ही दल होता है, यह प्रायः अधिनायकवादी शासनों में पायी जाती है। अधिनायक अपना विरोध सहन नहीं करना चाहता। इटली में मुसोलिनी के समय केवल फासिस्ट पार्टी थी और जर्मनी में हिटलर के समय केवल नाजी पार्टी थी। आज साम्यवादी राज्य में भी केवल एक दल होता है क्योंकि वह भी एक नये प्रकार का

Scanned with CamScanner

अधिनायकवाद है जिसे सर्वसत्तावादी का अधिनायकवाद कहते हैं। सोवियत रूस और चीन साम्यवादी दल की ही तानाशाही है। इन देशों में संविधान के द्वारा दूसरा कोई दल बन ही नहीं सकता।

(2) **द्विदलीय प्रणाली** — द्विदलीय प्रणाली के अन्तर्गत शासन की बागडोर दो दलों के बीच में ही घूमती रहती है। ब्रिटेन और USA इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। द्विदलीय प्रणाली का यह अर्थ नहीं कि इन देशों में दो ही दल है। इसका अर्थ यही है कि सरकार दो में से एक ही दल की बनेगी। शेष तीसरे या चौथे दल छोटे-मोटे या शासन की दृष्टि से महत्वहीन है। ब्रिटेन में आज श्रमिक दल व अनुदारवादी दल दो ही ऐसे दल हैं जिनमें से एक ही सरकार बनाते हैं। USA में भी दो ही दल महत्वपूर्ण हैं डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टी।

(3) **बहुदलीय प्रणाली** — जिस देश की राजनीति में दो से अधिक राजनीतिक दलों का महत्व होता है उसे बहुदलीय प्रणाली कहा जाता है। जैसे, इटली, भारत आदि देशों में बहुदलीय प्रणाली ही है। इस प्रणाली में कोई एक दल इतना बहुमत प्राप्त नहीं कर पाता कि वह अपनी सरकार बना सके। बहुदलीय प्रणाली के अन्तर्गत सरकार स्थिर नहीं हो सकती। क्योंकि मिलीजुली कई दलों से बनती है।

* **दलीय प्रणाली के मूल्यांकन (गुण)** —

दलीय व्यवस्था के गुण-दोष दोनों हैं। एक ओर गाँधी जी और लॉवेल ने लिखा कि, केवल दलीय व्यवस्था ही प्रजातन्त्र शासन को संभव बनाते हैं। दूसरी ओर ऐसे भी विचारक हैं जिन्होंने दलीय प्रणाली की निन्दा की है। USA संविधान के निर्माताओं ने राजनीतिक दलों का कड़ा विरोध किया था। मार्क्सवादियों ने दलीय प्रजातन्त्र को बुर्जुआ प्रजातन्त्र कहा है। सर्वोदयी दल-विहीन प्रजातन्त्र की बात करते हैं। दल प्रणाली की गुण-दोष निम्न हैं-

(1) प्रजातन्त्र को व्यवस्थित स्वरूप देते हैं — यदि राजनीतिक दल न हों तो प्रजातन्त्र के अन्तर्गत सरकार का व्यवस्थित रूप देना कठिन होगा। यह दल ही मतदाताओं को संगठित करके मतदान को सरल बनाते हैं।

(2) **महत्वपूर्ण समस्याओं को प्रस्तुत करना**

राजनीतिक दल देश की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक आदि महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार करते, जनमत तैयार करते और अपनी नीति प्रकट करने के लिए प्रयत्न करते हैं।

(3) **निरंकुशता पर रोक** संसदीय व्यवस्था में बहुमत प्राप्त राजनीतिक दल द्वारा शासन कार्य किया जाता है और अल्पसंख्यक दल विरोधी दल के रूप में कार्य करता है। विरोधी दल शासक दल की मनमानी पर रोक लगाकर संतुलन बनाये रखता है। विरोधी दल का अस्तित्व जनता को विद्रोह से भी रक्षा करता है क्योंकि यदि जनता में सरकार के विरुद्ध असंतोष फैल जाता है तो विरोधी दल दूसरी सरकार बनाने हेतु तैयार रहता है।

(4) **श्रेष्ठ कानूनों का निर्माण**

श्रेष्ठ कानूनों का निर्माण तभी सम्भव है जब कानूनों के गुण-दोषों पर उचित रीति से विचार हो। संसद में विरोधी दल के सदस्य शासक दल के विधेयकों की कमियां उजागर करते रहते हैं। इस प्रकार वाद-विवाद से एवं विधेयकों के सभी पक्ष सामने आने से श्रेष्ठ कानून का निर्माण सम्भव होता है।

(5) **शासन के विभिन्न अंगों में सामंजस्य**

राजनीतिक दल शासन के विभिन्न अंगों में सहायक होते हैं क्योंकि संघात्मक राज्य में भी कोई दल अपने कार्यक्रमों व नीतियों को व्यवहारिक रूप प्रदान कर सकता है तो सरकार के विभिन्न अंगों में सामंजस्य भी स्थापित करते हैं।

(6) **राष्ट्रीय एकता की स्थापना**

दल असंख्य व्यक्तियों को संगठित करते और उन्हें राष्ट्र के कल्याण के संबंध में विचार के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार यह समाज में व्यापक दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक होते हैं जिससे राष्ट्रीय एकता के भाव मजबूत हो जाते हैं। अतः राजनीतिक दल राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(7) **सामाजिक एवं आर्थिक विकास**

प्रत्येक राजनीतिक दल सत्ता में आने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्नशील हैं। राजनीतिक दल सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी सुधार के लिए सरकार को सुझाव देते हैं और स्वयं इन सुधारों के लिए कार्य करते हैं।

Scanned with CamScanner

(4) **विघटन को प्रोत्साहन**

जातिवाद के कारण व्यवस्था में कमियाँ कहीं-कहीं निरन्तर प्रचलित है और अव्यवस्था फैलाने के लिए संस्थाएँ भी होती हैं। राजनीतिक दलों के अभाव में विभिन्न विचारधारा वाले होंगे जिनमें आपस में किसी प्रकार नहीं होगी जो एक होकर कार्य करें। राजनीतिक दल सदस्यों को अनुशासित रखने में विभिन्न दलों के बीच वाद-विवाद चलता है।

दलीय प्रणाली के दोष

(1) **दलों के गलत प्रचार से राष्ट्रीय हितों की हानि**

राजनीतिक दल जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए झूठे व गलत प्रचार करते हैं और जनता को पथभ्रष्ट बनाते रहते हैं।

(2) **जनता में वैमनस्य की वृद्धि**

गार्नर ने ठीक लिखा है कि, "दल केवल व्यावसायिक वर्गों को ही नहीं वरन् राष्ट्र को भी दो परस्पर विरोधी गुटों में बाँटते हैं और विरोधों के स्वाभाविक रूप को विकसित कर पेश करते हैं। दल, सामान्य सहयोग के स्थान पर क्रोध और कड़वाहट को स्थान देते हैं।

(3) **योग्य व्यक्ति सेवा से वंचित**

दलीय प्रणाली के कारण देश उन योग्य व्यक्तियों की सेवा से वंचित रह जाता है जो किसी दल में हैं।

(4) **विधानमण्डल के सदस्यों की स्वतंत्रता समाप्त**

विधानमण्डल के भीतर बहुमत दल के सदस्य तथा विपक्षी सदस्य भी स्वतन्त्र आचरण नहीं कर पाते हैं और उन्हें दलीय अनुशासन के कारण दल के नेताओं के आदेशों का पालन करना होता है।

(5) **दल देश में भ्रष्टाचार फैलाते हैं।**

वे न केवल चुनाव जीतने के लिए जनता को गुमराह करते हैं, नकद राशि, शराब व तरह-तरह के प्रलोभन देते हैं। जीतने पर अपने समर्थकों को नौकरी से लाभ आदि पहुँचाते हैं। वे जनता को अपने पक्ष में करने के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपनाते हैं।

(6) राजनीति का व्यवसायीकरण

कुछ लोगों ने व्यवसायियों/लोग अपने आपको राजनीतिज्ञ कहकर राजनीति को व्यवसाय बनाकर उसे धन कमाने के साधन और सीढ़ी बना रखी है।

(7) हिंसा और धन लोलुपता

दलों में आज विघटनकारी तत्वों के बीच विवादों, धर्मान्ध, अराजकता आदि से देश में सर्वमुख्य हिंसा और धन की लोलुपता की समस्या है।

(8) साम्प्रदायिक वैमनस्य

कुछ अवसरों पर राजनीतिक दल ऐसे दूषित नारे लगाते हैं जिससे देश में विभिन्न सम्प्रदायों के बीच वैमनस्य हो जाता है।

निष्कर्ष — यद्यपि दलीय प्रणाली में बहुत से दोष हैं, फिर भी दलों का उन्मूलन संभव नहीं है। राजनीतिक दलों के संगठन में शासन के कार्य भार के रूप में संभव नहीं है। दलीय प्रणाली को आवश्यक बुराई के रूप में स्वीकार करना ही होगा। फिर भी दलीय प्रणाली के कुछ दोष हो रहे हैं जिन्हें सावधानी से दूर किया जा सकता है। दलों का निर्माण आर्थिक आधार पर न होकर राष्ट्रीय हितों की दृष्टि से होना चाहिए। दलों को स्वस्थ जनमत का निर्माण करना चाहिए क्योंकि लोगों को गुमराह करते हैं। भविष्य में अच्छी दलीय पद्धति लाभदायक सिद्ध होगी।

अच्छी दलीय प्रणाली के लक्षण —

किसी भी राजनीतिक दल को अच्छा दल बनाने के लिए निम्न लक्षण आवश्यक हैं —

(क) किसी देश में दो या तीन राजनीतिक दलों से अधिक नहीं होने चाहिए।

(ख) राजनीतिक दलों का निर्माण धार्मिक या जातीय आधार पर नहीं होना चाहिए। ऐसे दलों पर प्रतिबन्ध लगा देना ही उचित होगा।

(ग) राजनीतिक दलों का उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की अभिवृद्धि होना चाहिए।

(घ) दलीय प्रणाली की सफलता के लिए जनता का शिक्षित होना आवश्यक है।

(ङ) दलीय अनुशासन की कठोरता से पालन करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

प्रशासन में राजनीतिक दलों की भूमिका

1) **लोकमत का निर्माण**

वर्तमान युग में राज्य के विषय अधिक जटिल और व्यापक होते हैं। साधारण व्यक्ति के लिए उनका समझना सम्भव नहीं है। ऐसी स्थिति में राजनीतिक दल सार्वजनिक समस्याओं को जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं। तथा विभिन्न राजनीतिक दल समस्याओं के सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण का प्रतिपादन करते हैं और साधारण जनता लोग जनमत निर्णय कर सकती है और लोकमत का निर्माण होता है। अतः लावेल के शब्दों में, "जिस प्रकार ज्वार-भाटा समुद्र के जल को ताजा और गतिशील रखता है उसी प्रकार राजनीतिक दल राष्ट्र के दिमाग को ताजा और गतिशील रखता है।"

(2) **चुनाव का संचालन**

राज्य सीमित थे और निर्वाचकों की संख्या भी कम थी तब तो राज्य में चुनाव लड़े जाते थे, लेकिन आज व्यापक मताधिकार के प्रचलन के कारण राजनीतिक दलों के बिना चुनाव लड़ना असम्भव हो गया है। ऐसी स्थिति में राजनीतिक दल अपने दल की ओर से उम्मीदवारों को खड़ा करते और उनके पक्ष में प्रचार करते हैं। चुनाव में होने वाला भारी खर्च भी राजनीतिक दलों द्वारा ही किया जाता है,

(3) **सरकार का निर्माण**

निर्वाचन के बाद राजनीतिक दलों के द्वारा ही सरकार का निर्माण किया जाता है। अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था में राष्ट्रपति अपने विचारों के प्रतिनिधियों का मंत्रिमंडल बना कर शासन का संचालन करता है। संसदीय शासन में जिस राजनीतिक दल को व्यवस्थापिका में बहुमत प्राप्त हो उसे मंत्रिमंडल के निर्माण के द्वारा शासन का संचालन किया जाता है। इस प्रकार संसदात्मक और अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्थाओं में सरकार का निर्माण किया जाता है

(4) **शासन को मर्यादित रखना**

यदि बहुसंख्यक राजनीतिक दल शासन का संचालन करता है तो विरोधी दल शासन शक्ति को सीमित रखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। विरोधी दल के शासन में एक ही दल अधिनायक बन जाता है।

(5) **सरकार के विभिन्न विभागों में समन्वय** :

संसदीय शासन में शासन निर्माण और

Scanned with CamScanner

शासन की शक्ति एवं राजनीतिक दलों के हाथ में होती है और उनके अनुशासन के द्वारा कार्यपालिका व्यवस्थापिका से अपनी इच्छानुसार कानूनों का निर्माण करवा सकती है। लेकिन इस रूप में भिन्न है कि दोनों अलग-अलग कार्य होते हैं। राजनीतिक दलों के सहयोग के बिना शासन संचालन संभव नहीं है।

(6) राजनीतिक चेतना का प्रसार:

राजनीतिक दलों का उद्देश्य अपनी लोकप्रियता बढ़ाकर शासन सत्ता पर अधिकार करना होता है, इसलिए वे लोग, लोकसभाओं और सभा समितियों के माध्यम से अपनी विचारधाराओं का अधिक-से-अधिक प्रचार करते हैं और इसके द्वारा वे भी राजनीतिक चेतना का प्रसार करते हैं। लॉवेल ने ठीक ही कहा है कि राजनीतिक दल राजनीतिक विचारों के दलाल (broker of [illegible]eas) के रूप में कार्य करते हैं।

(7) सरकार और शासित के बीच सम्बन्ध:

प्रजातंत्र में आवश्यक है कि शासक और शासित के बीच सम्पर्क बना रहता है और सम्पर्क स्थापित करने का सबसे बड़ा साधन राजनीतिक दल है। प्रत्येक दल निर्वाचन की तरफ आकृष्ट होते हैं उनके अनुसार जनता के बीच सरकारी नीति का प्रचार करते हैं तथा जनता को अपने पक्ष में बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं। इसलिए वह दोनों के बीच सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

वस्तुतः राजनीतिक दल प्रजातांत्रिक शासन की धुरी के रूप में कार्य करते हैं और प्रजातंत्र शासन के संचालन के लिए राजनीतिक दलों का अस्तित्व अनिवार्य है। इसलिए ही राजनीतिक दलों को महत्व को स्पष्ट करते हुए ब्राइस ने कहा है कि, प्रजातंत्र रूपी मशीन में राजनीतिक दल तेल के समान हैं।

नाम : किरीतोषा सिंह, एड प्राध्यापक
विभाग : राजनीति विज्ञान
कॉलेज : राम नारायण कॉलेज, पंडौल, मधुबनी
वर्ग : बी.ए. प्रतिष्ठा - I
विषय : राजनीतिक दल
दिनांक : 06/04/2020